प्रो० (डॉ०) सुधीर कुमार सिंह, प्राचार्य एवं अध्यक्ष
समाजशास्त्र विभाग, रोहतास महिला कॉलेज, सासाराम

B.A. PART III (Hon's) – paper – V
(सामाजिक विचारों का इतिहास)

Topic – गाँधीजी के सत्य एवं अहिंसा का सिद्धांत:

सत्य के सच्चे पुजारी के रूप में गाँधीजी का पूर्ण विश्वास था कि 'सत्य ईश्वर है और ईश्वर सत्य है'। महात्मा गाँधी ने सत्य और अहिंसा को अपने स्वप्नों के नवीन समाज का आधार बनाया। कुछ लोगों का विश्वास है कि गाँधीजी की सत्यप्रियता हिन्दू धर्म से और अहिंसा- बौद्ध, जैन एवं ईसाई मत से प्रभावित थी।

वह समस्त संसार के लिए स्वतंत्रता माँगते थे, अहिंसा, लोभ, आक्रमण जिन्होंने शस्त्रों को नष्ट कर दिया है, इत्यादि से भी स्वतंत्रता। उन्होंने Young India नामक पत्रिका में लिखा था, " जिन ऋषियों ने हिंसा के बीच अहिंसा के सिद्धांत को खोज निकाला, वे न्यूटन से अधिक प्रखर बुद्धिवाले लोग थे, वे स्वयं वेलिंगटन से अधिक वीर योद्धा थे। स्वयं हथियारों का प्रयोग जानते हुए भी उन्होंने इसकी व्यर्थता को अनुभव किया और उन्होंने युद्ध से दुःखी संसार को बतलाया कि

इसकी मुक्ति हिंसा द्वारा नहीं अपितु अहिंसा द्वारा ही है।"

निर्भीकता इनके सत्याग्रह का आवश्यक अंग था। वह लोगों के दिल से सरकार, पुलिस, सी. आई. डी., जेल और अधिकारियों का भय निकाल देना चाहते थे। इनके अनुसार सत्याग्रह और असहयोग गरजने वालों और डींग मारने वालों के अस्त्र नहीं हैं। यह तो आपकी ईमानदारी की कसौटी है। इसमें ठोस और मूक आत्म-बलिदान की आवश्यकता है। अहिंसा इसका परम आवश्यक अंग है।

इसका अर्थ अन्यायी के आगे चुपचाप झुक जाना नहीं है अपितु अपनी आत्मा को अन्यायी की इच्छा के विरुद्ध लड़ाना है। इसके प्रति घृणा नहीं, प्रेम, अहिंसा, क्षमा तथा करुणा की भावना से, जिससे उसकी आत्मा प्रभावित हो जाये और उसका मन ही बदल जाए।

वह अंग्रेजों के निजी और सामूहिक रूप से विरुद्ध नहीं थे। वह अंग्रेजों के साम्राज्यवाद के विरुद्ध थे। इसकी जड़ में यह विश्वास था कि मानव प्रकृति अच्छी है और एक अन्यायी का मन आत्म बलिदान से बदल जाएगा।

—— x —— x —— x —— x ——